ISSN 2320-4494
RNI No.MAHAUL03008/13/2012-TC

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Refereed Research Journal
UGC Approved
Special Issue - September 2017

म.शि.प्र.मंडळाचे

सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय, माजलगाव आयोजित

आंतरविद्याशाखीय राष्ट्रीय परिषदेचा विशेषांक

हुंडा-एक समस्या : आव्हाने व उपाय

दि.११/०९/२०१७

बोडके बी.आर.
(संपादक)

डॉ.व्ही.पी.पवार
(प्राचार्य)

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	प्रकरण	संशोधक	पृष्ठ क्रं.
१	हुंडा ही समाज विकृती	डॉ.राम फुले	१
२	हूंडा समस्येची कारणे, परिणाम, वास्तव्य स्थिती व उपाय योजना	डॉ.दिलीप खैरनार, प्रा. नारायण भर्तरीनाथ शिंदे	३
३	हुंडा :- सामाजिक समस्या व उपायावरील मानसशास्त्रीय विश्लेषण	डॉ. एम. जी. शिंदे	७
४	महिला सक्षमीकरण आणि शासनाने महिलांसाठी केलेले कायदे महिला अत्याचाराच्या संदर्भात	प्रा. इरलापल्ले पी.बी.	१०
५	दहेज प्रथा : एक व्यापार (हिंदी कविताओं के विशेष संदर्भ में)	डॉ.राजश्री लक्ष्मण तावरे	१४
६	हुंडाः सामाजिक समस्या व उपाय	प्रा. डॉ. मुधकर हरी चाटसे	१६
७	हुंडा एक समस्या कारणे परिणाम व उपाय	प्रा. डॉ. नामानंद गौतम साठे	१८
८	हुंडा : ऐतिहासिक पार्श्वभूमी	प्रा. पावाडे खोब्राजी वामनराव	२१
९	हुंडाविषयक कायदेशीर उपाययोजना	प्रा. राणी जगन्नाथराव जाधव	२३
१०	हुंडा प्रथा : कारणे, परिणाम व उपयोजना	प्रा. डॉ. पुरी तात्या बाळकिशन	२६
११	हूंडा पध्दतीमुळे शेतकऱ्यांवर होणाऱ्या परिनामाचा अभ्यास	प्रा. जिजाराम श्रीकृष्ण बागल	३०
१२	आदिवासी समाजातील 'हुंडा पध्दती' : स्वरुप, कारणे व उपाय	प्रा. डॉ. खोडेवाड देविदास	३२
१३	हुंडा पध्दती : स्वरुप, दुष्परिणाम व उपाय	प्रा.डॉ.मुकूंद देवर्षी	३७
१४	जात-वर्गीय पुरुषसत्ताक व्यवस्थेचे अपत्य : हुंडा	प्रा.डॉ.मारोती कसाब	४१
१५	भारतीय समाजातील हुंडा समस्येची कारणे	प्रा. बळीराम पवार	४४
१६	रामकुमार वर्मा के एकांकियों में चित्रित दहेज प्रथा की शोकांतिका	प्रा. डॉ. धीरज जनार्धन व्हते	४६
१७	हुंड्यामुळे शोभा व न्यानबाच्या उद्ध्वस्ततेची शोकांतिका म्हणजे व्हाल्या हाल्या दुधू दंड ही कांदबरी.	डॉ. विजयकुमार शिवदास ढोले	४८
१८	हुंडा : सामाजिक समस्या व उपाय	कु. उज्ज्वला राजकुमार डोंगरगावे,	५२
१९	हिन्दी कथा साहित्य में अभिव्यक्त दहेज समस्या	प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार	५५
२०	हुंडा : स्त्रियांच्या अस्तित्वावरील प्रश्न	धनश्री पद्माकर कोयले	५९
२१	हुंडा प्रथेतील विविध घटकांची भूमिका	कविता किशोर कोत्तावार	६३
२२	हुंडा प्रतिबंधक कायदा - १९६१	प्रा. अर्चना कुंडलिकराव चवरे	६७
२३	भारतातील हुंडा पदधतीची कारणे दुष्परीणाम व त्यावरील उपाय	प्रा: डॉ. एस. पी. गायकवाड	७१

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist. Nanded

Power of Knowledge UGC Approved Journal Volume : 1 Special Issue, Sept.2017 ISSN 2320-4494

हिन्दी कथा साहित्य में अभिव्यक्त दहेज समस्या

प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार
हिंदी विभाग
देगलूर महाविद्यालय,देगलूर

हिन्दी कथा साहित्य ने सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक,शैक्षणिक, राजनीतिक आदि परिस्थितीयों में व्याप्त विकृतियों, विडंबनाओं एवं विषमतआ को वाणी प्रदान की है | सामाजिक सरोकार को निभाने का बखुबी कार्य साहित्य नें किया है | समाज में व्याप्त घृणित समस्याओं को एवं मानसिकताको हिन्दी कथा साहितय में उघाडा गया है | अंधश्रध्दा,कर्मकांड, बाहयअडंबर,उँच-नीचता, आदि समस्याओ के साथ-साथ समाज को खोखला बनानेंवाली दहेज समस्या भी बडी गंभीरता एवं सुक्ष्मता से उजागर किया है | दहेज समस्या केवल दहेजतक सिमित नही है | दहेज-प्रथा ही स्त्री भ्रुण हत्या, बालविवाह, अनमेल विवाह, घटस्फोट,कुंठा, आत्महत्या, एवं स्त्री अत्याचार की जननी हैं |

दहेज प्रथा भारतीय समाज की घिनौनी एवं घातक कुप्रथाओं मे से एक है | इसी दहेज प्रथा के कारण बालविवाह, भ्रूणहत्या, स्त्रीहत्या,प्रर्दा-प्रथाए एवं स्त्रीशोषण जैसी भयंकर समस्याओं ने जन्म लिया है | माता-पिता को लडकी बोझ लगने लगती है | इस कारण विवाह की जल्दबाजी अनेक समस्याओं को जन्म देती है | कन्यादान जो पवित्र विधि मानी जाती है उसने आत्म विकृति को आत्मसात किया है | कन्यादान ने आज दहेज का रुप धारण कर लिया है | आज विवाह के समय लडके की शिक्षा, घराना, रुपरंग आदि के अनुसार सौदेबाजी की जाती है | इसी सौदेबाजी के कारण लडकी के विवाह के लिए अनेक संघर्ष करने पड रहे है | दहेज देने के लिए कर्ज लेना, घरदार एवं खेत बेचना यह आम बात हो गई है | वरपक्ष दहेज लेने के बाद भी अपने लालच को बरकरार रखता है जिसके परिणाम स्वरुप पत्नी का शोषण, जलाना एवं हत्या जैसी घटनाएँ रोज घटित होती है | विवाह के पश्चात बहुत सारी स्त्रियों को अनेकविध यातनाएँ सहन करनी पडती है, जिससे वह आत्महत्या करने के लिए विवश हो जाती है | विवाह यह स्त्री उपभोग और शोषण का माध्यम बन गया है | पैसे के अभाव में माता - पिता अपनी बेटी का विवाह अधेड वृध्द पुरुष एवं विधुर से करवा रहे हैं जिससे स्त्री का सम्पुर्ण जीवन बरबाद हो रहा है | भ्रुणहत्या तथा विधवा समस्या बढने का कारण दहेजप्रथा ही है |

दहेज जैसी कुप्रथा आज प्राय: सभी राज्यों, धर्मो, जातियों, संप्रदायों में किसी ना किसी रुप में पायी ही जाती है| धन,गाडी, बंगला, सोना,चाँदी गहनें, भौतिक सुखसाधनों की विविध वस्तुएँ आदि विविध रुपों मे वह कार्यरत है | दहेज प्रथा के विविध रुपों को शरद जी ने इन्दौर में शादियाँ देखकर नामक निबन्ध में अपने व्यंग्य बाण छोडे है - "दहेज में मिला सोफा, रेडिओ, सूट, टी सेट, लेमसेट, टेबल लॅम्प, बरतन और सॉस लेती मांस का लौदा लडकी के बदनपर टँगे, लटके और चिपके जेवरों को देख उसे एक पूरी दुनिया मिलजाने का भ्रम हो जाता हैं |" वर्तमान में दहेज के लिए हत्या बढती जा रही है | इसी कारण लडकी के माता-पिता को कर्ज के कारण आत्महत्या के लिए विवश होना पड रहा है | अनेक माता-पिता तो अपने लडकियों को जहर पिलाकर खुद आत्महत्या करते है, उसका कारण है- दहेजप्रथा | इसी दहेजप्रथा ने माता-पिता के मन में दहशत पैदा कर दी है | बहुत सारे ससुराल यह नरकयातना के केंद्रबिंदू बन गए हैं | इसी केंद्रबिन्दु में बहु को जलाने के लिए सारे ससुराल वाले एक हो जाते है |

परिवार के इस नंगेपन पर शरद जी ने मामला सास-बहू का नामक निबन्ध में कटु प्रहार किए है | जिस दिन सास आपको जलाने के लिए किरोसीन का डब्बा लेकर खडी हो जाएगी उस दिन वह शख्स,जिसे आप पति कहती है, माचिस की तीली को कर्तव्य की मशाल की तरह हाथ में ले उसका साथ देगा | सह चौंतीस साल की ट्रेनिंग है, जो इस देश के भ्रष्ट माता-पिताओं ने अपने लाडले बेटो को दी है | विवाह एक पवित्र संस्कार है, जो दो आत्मा और दो परिवारों को मिलाता है | इस पवित्र संस्कार ने आज विकृति को अपनाया है | विवाह समारोह की भव्यता, झगमग, धूमधाम और दावतें आज इज्जत और

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S GLOOR COLLEGE

प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गए है | वाह - वाही पाने की लालसा का माध्यम विवाह समारोह बन गए है | अपनी क्षमता को ... एवं पैसो का प्रदर्शन विवाह में बेखौफ किया जाता है |

दहेज और विवाह समारोह में तामझाम का अगर प्रदर्शन ना हो तो परिवार की इज्जत समाज में कम हो जाती है उनकी नाक कट जाती है, अपनी बेतुकी नाक को बचाने के लिए वह कर्ज में डूब जाते हैं | इतना ही नही शादी धूमधाम से करने के लिए रिश्वतखोरी, कालाबाजारी, लूटमार, अन्याय, अनीति एवं अत्याचार का भी सहारा लेते है | विवाह समारोह को अपनी इज्जत समझने वाले लोगों की मानसिकता और विवाह समारोह को श्रेष्ठतम बनाने के लिए किए जानेवाले कारनामों पर शरद जी ने करारा व्यंग्य कसा है - "रईसों का काला रुपया, काली साख, काले रिश्ते उनका समूचा आसपास और जीवन का अंग बन गया है | शादी के वक्त यही सब कोढ की तरह आपने पुरे भद्दे और भौंडेपन के साथ फूटता है | इस देश में लोग झूठ क्यों बोलते है, गलत दलाली क्यों करते हैं, रिश्वत क्यों खाते है, डंण्डी क्यों मारते है, मिलावट क्यों करते है, पैसा क्यों दबाते है, शोषण क्यों करते है ? सिर्फ इसीलिए कि वे अपने घर की शादियाँ धूमधाम से कर सकें |"[3]

विवाह समारो मे अपनी इज्जत बढाने के लिए और दहेज के लिए मनुष्य सारी जिंदगी बेईमानी, पाखण्ड और झूठ के कीचड में लथपथ रहने को सदैव तत्पर रहता है | शादी में जोरदार बॅण्ड बजवाने, बिजली की लाईट लगाने औरभारी दहेज देने और लेने का एक अजब मोह भारतवासियों के मन में है | इसी मोह के कारण दूसरों के ऊपर विजय पाने की इच्छा और इससे बडी शादी करने के लिए वह दुसरों के विवाह समारोह देखता है और उससे अच्छा विवाह समारोह करने की तैयारी करता है | लोगो की इसी इज्जतमोही मानसिकात को शरद जी ने बेपर्दा किया है | विवाह समारोह यह प्रतिष्ठा की प्रतियोगिता बन गई है, इस ढोग पर उन्होने करारा प्रहार किया है - "वे सजावट के फैलाव और उपस्थिती को आँकते है वे विठाई, आईस्क्रिम और महँगेपन परनजर डालते हैं | फिजुलखर्ची को दख उन्हे अफसोस नहीं व्यापता | बल्कि वे मन -ही मन कल्पना करते हैं कि जब उनके यहाँ अवसर आएगा वे ऐसा ही । इससे बढ चढकर करेंगे | इस देश में विवाहखर्च की सामाजिक प्रतियोगिता है | अपनी औकात के नंगे प्रदर्शन, का उच्चतम क्षण |"[4]

दहेज के विरुध्द समाजसेवी, नेता, जनता, मंत्री, अफसर, शुभिचिंतक, विव्दान और विचारक कोई भी नहीं है| सब उसकी वाह-वाही करते है | शादी तो वर्तमान में पैसा फुँकने का महापर्व बन गया है | क्या बिना ताम झाम के, बिना फिजूलखर्ची के विवाह संस्कार नही हो सकता क्यो ? को सकता है, परन्तु भारतवासियों की नंगे प्रदर्शन की, मानसिकता एवं दहेज मोही मानसिकता बदलीन होगी | वर्तमान समाज का मनुष्य धीरे-धीरे मानवता से दूर होता जो रहा है | पारिवारिक सम्बन्धों मे आत्मीयता और सहजता का न्हास होने लगा है | जीवनमुल्य नष्ट होते जा रहे है | पाश्चात्य संस्कुति के प्रभाव ने भारतीय संस्कृति के उदात्त मुल्यो को घायल कर दिया है | मानव आज आडम्बर, ढोग और दिखावे को महत्व दे रहा है | जीवन में सत्य, त्याग, उदारता एवं सेवा शरीर को कष्ट देने वाले मूल्य प्रतीत हो रहे है | भारतीय समाज की परम्परागत रुढियों, रीति-रिवाजों एवं उसूलो से उबा मनुष्य विदेंशी सभ्यता के मोह में पड मानसिक बीमकारियों का शिकार हो गया है | पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौध ने भारतियों को भावग्रस्त एवं कुण्ठित कर दिया है | अर्थ केंद्रित विचारधारा और भौतिक सुखसाधन पान की लासा मनुष्य को इतना नीच और लाचार बना दिया है, की वह अपने मुल्यों को भी तिलांजली दे रहा है | मनुष्य की इसी नीचता को शरद जी ने मामला सास-बहू का नाम निबन्ध मे कटू-व्यंग्य किया है - "खूब पैसा, घनघोर साफलता, जीवन का परम लक्ष्य बन गया | उसके लिए कुछ भी करना पडे करो | कनाडा, दुबई जहाँ जाना पडे जाओ | पीना पडे पीओ | खिलाना पडे खिलाओ | पार्टियों मे पत्नियों के जिस्मों की झाँकी प्रदर्शित करनी कपडे करो | नजर लक्ष्य पर रखो और इस सिलसिले मे कपडे मे ढीलापन आ रहा है, तो आने दो |"[5]

"दहेज की लालसा व्यक्ती को पशु बना देती है | आज दहेज का बीभत्स रुप समाज में व्याप्त हो गया है | मांग अथवा याचाना, अथवा भिक्षा शब्द दहेज के पर्याय बन चुके हैं | वांछित भिक्षा न मिलने पर, नारी जाति के शत्रु एवं लोभी लालची पुरुष नविवाहिता पर अत्याचार करत है, उसे यातनाएँ देते है और माँगी गई वस्तु अथवा धनराशी के प्रतिरोध में उसकी हत्या कर देते है|"[6]

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR

प्रभा जी अपने उपन्यास में मारवाडी समाज में स्थित इस कुप्रथा को लेकर उसके विविध पहलुओ पर प्रकाश डालनी चाहती है | छिन्नमस्ता, मे प्रभा जी मारवाडी समाज के लिए दहेज कितना अनिवार्य है तथा यह समाज इस प्रथा को बरसों से कैसे वहन कर रहा है | इसका चित्रण किया है[6] | साथ ही प्रभा जी यह भी बताना चाहती है कि, पारंपारिक विचारों से ग्रसित मारवाडी सामाज के जिस दिन बेटी जन्म लेती है, उसी दिन से माँ अपने खुद के दहेज में मिली हुई बहुमूल्य चीजें, चाँदी के बर्तन, गहने सब अलग रखने लगती है | ताकी बेटी को दहेज देने में उसे सुविध निर्माण हो | पीली-आँधी मे मिस्टर अग्रवाल अपनी सुंदर, सुशील बेटी की शादी, कलकत्तावाले रुंगठा परिवार में करने के लिए बीस लाख रुपए का दायजा (दहेज) देते है"[7].

दहेज प्रधानता ने चरित्र एवं कर्म को गौन बना दिया | रीतू अपने दर्द को व्यक्त करते हुए कहती है की, "मम्मी आप लोगों ने कुणाल के साथ मुझे धन के तराजू पर तौल दिया, पर क्या धन की सब कुछ है ? "[8]ढेर सारी सम्पत्ति दहेज में देकर भी स्त्री को स्वतंत्र जीवन नसीब नहीं होता | उसका जीवन गृहस्थी के भीतर बंदिस्त होकर रह जाता है | दहेज प्रथा के कारण समाज में स्थित स्त्री के बंदिस्त जीवन को लेकर प्रभा जी कहती है कि, "देहज प्रथा में की जानेवाली मांग संस्कृतिकरण की वह प्रक्रिया है, जो अब भी स्त्री को गृहस्थी मे सीमित रखना चाहती है|

दहेजप्रथा नें स्त्री के अग्निग्ध को सीमित करदिा है | वर्तमान परिवेश में अगर किसी माता-पिता को चार पॉच लडकिया है, तो उनके सामने दहेज देकर उनका ब्याह करना अत्यंत मुश्किल काम होता है | मजबूरन ऐसे पविार वाले किसी भी अयोग्य लडके के साथ उसका ब्याह करवाते है | इ स रिश्ते में माता-पिता यह नही देखते कि लडकी क्या चाहती है, उसकी इच्छा क्या है, ? उसे वह लडका पंसंद है या नहीं ? अतः पविार वाले ऐसे रिश्ते के आगे उसकी इच्छा को, उसके गणों को नजरअंदाज कर देते है | इसलिए वे ऐसे रिश्ते ढूँढ-ढँढकर लाते है | प्रेम कहानी उपन्यास की पढी -लिखी यशा भी इसका शिकार होती है | उसके पिताको चार बेटियाँ है | एक-एक बेटियाँ का ब्याह करके वह खुली सॉस लेते हैं| एक मजबूर पिता की व्यस्था यशा अपनी सहेली जया से इन शब्दों मे व्यक्ती करती है, "तू अपने घर की इकलौती औलाद है जया, तुझे क्या पता चार लडकियों के बाप को अपनी बेटियाँ ब्याहने की कैसी उतावली रहती है. वे रिश्ता ढूँढते समय यह नहीं देखते कि रिश्ता लडकी के लायक है या नहीं वे तो गिनती पूरी करते है | मेरी दोनोंद दिदियों के एक-एक कर ब्याह हुए तो पिताजी ने हर बार हाथ झाडकर कहा यह भी गई, अब बची तीन | यह भी पार लगी, अब बर्ची दो .|"[10] दहेजप्रथा ने माँ-बाप को मजबुर और लाचार बना दियाहै |

दुष्प्रभाव होते है,जैसे-दात्मपत्य-संबंधो में दरार, तनाव,संघर्ष बाल-विाह विधवाओ की समस्या आत्महत्याएँ आदि| 'मुझे माफ करना उपन्यास' में नायिका मंदा और उसके पति के अनमेल-विवाह की ही कहानी है| नायिका मंदा और उनके पति में लगभग 20-22 वर्षो का अंतर होता है | नायिका बहुत कोशिश करती है, इस अंतर को पाटने की जैसे-साज सिंगार छोड देती है, सादे कपडे पहनती है, पति के अनुकूल चलने का प्रयास करती है-किंतु वह अंतर कम नही हो पाता है, बल्कि दुरियाँ और बढती ही जाती है | मंदा स्वयं अपने इस अनमेल-विवाह के विषय में एक स्थान पर कहती है, "मैं यह जानती थी कि हम दोनों की विचारधाराएँ उसी तरह नहीं मिलती, जिस तरह नदी के दो किनोर, फिर भी, जो लोग इस रिश्ते मे दिलचस्पी ले रहे थे वे दोनो किनारो को मिलाने के लिए एक कृत्रिम सेतु की रचना करना चाहते थे | दो विपरीत धुवो का मिलन क्या संभव हो सकता है ....|"

बेमेल-विवाह के चलते ही नायिका मंदा और उसके पति दोनों अपने वैवाहिक जीवन से संतुष्ट नही है | मंदा स्वयं को पति के समक्ष दीन,हीन,लघु समझती, सदैव उनकी महानता के बारे में सोचती, अतः हर समय डरी -सहमी रहती, उनके सामने कभी सहज नहीं हो पाती | बालविवाह यह समस्या भी दहेज प्रथा देव है | इस प्रथा के चलते विधवाओं की समस्या, अनैतिकता को बढावा, स्त्रियों मे बीमारियों कि वृध्दि, रोगी बच्चे आदि समस्याएँ उत्पन्न होती है |'और सूरज डूब गया' उपन्यास मे लेखिका ने तत्कालीन समाज में बाल-विवाहो की स्थिती का चित्रण कुछ इस प्रकार किया है, यह युग बाल-विवाह का था| किशोर वय में लडके-लडकी का विंवाह न हो जाए तो पारिवारिक खोट के चर्चे बुलंद होने लगते थे | लडकियाँ तो कभी-कभी किशोरवय में प्रवेश भी नही कर पाती थी| उसी परंपरा के अनुसार जीवनदास का विवाह भी आसपास की किसी

ग्रामीण बाला से कर दिया गया | तब जीवनदास केवल बारह वर्ष के थे | फूल का दर्द उपन्यास की मुख्य पात्र अनन्ती और रुमिणी के विवाह को हम अनमेल - विवाह के साथही बाल-विवाह के अंतर्गत रख सकते है |

लेखिका ने आँखेमिचौली उपन्यास में दिनेशनंदिनी जी ने स्पष्ट किया है की, उस युग में लडकियो का कम उम्र में ही विवाह कर दिया जाता था | उपन्यास की मुख्य पात्र रेणू के माता-पिता का जब विवाह हुआ, तो उनकी आयु क्रमशः चौदह वर्ष और सोलह वर्ष थी | रेणू के जन्म के समय उसकी माँ की आयु केवल सोलह वर्ष ही थी| दहेज रुपी दानव सारे समाज को कलकित रक रहा है | आज पद के अनुसार लडको को दहेज दिया जा रहा है| हालाँकि दहेज लेनेवाले लडकी की अच्छाई, गुण,चरित्र,शिक्षा, नौकरी, संस्क्रार,व्यवहार आदि को नजर अंदाज कर रहे है. ममता कालीयाँ बेघर उपन्यास में दहेज की कुप्रथा का चित्रण किया है | परमजीत की माँ चाहती है कि हमें धूमधाम से या शान से क्या लेना - देना ? जिसमें दहेज न हो | उन्हें तो ऐसा घर चाहिए जो उनकी लडकी की शादी में हाथ बाँट दे | अतः ऐसा ही एक रिश्ता दिल्ली से आता है | लडकी मैंट्रिक तक पढी हुई होती है | लडकी के पिता का कहना था कि देने - लेने में कोई कसर नहीं रखेगे | फोटो भेज रहा हूँ | तुम्हें पसंद हो तो बात आगे बढायें| ममता कालिया के अनुसार वे “चार हजार नगद देने और प्रन्द्रह तोले सोना | उसकी माँ पहाडगंज जाकर लडकी देख आई है | उसे लडकी पसन्द है | वह कह आई कि वे लोग दो सौ आदमियाँ की बारात लाएँगे और दावत में देशी घी ही लगाना पडेगा दो सूट लडके के और एक सूटबाप को तो जरुर ही होगा. ”दहेज की रक्कम जीतनी होगी उतनी ही चर्चा और इज्जत समाज में बढती है | आज भी लडके का ब्याह तय होता है तो पहले यही पूछा जाता है दहेज कितना लिया | वर्तमान समय में विवाह का तात्पर्य ही दहेज लेना जैसा बन गया है अतः अपने बेटे के दहेज और अन्य विवाह उपयोगी वस्तुएँ मिलने से माँ-बाप की इज्जत सारे मुहल्ले में बढ जाती है आज के संदर्भ में दहेज का सामान भी मान-प्रतिष्ठा का प्रतीक बनता जा रहा है | दहेज में मिलने वाली वस्तुंओ को देखने के लिये मुहल्ले के लागो की भीड लग जाती है | परमजीत के विवाह में जो आया था, उसकी माँ ने अपनी बेटी बिम्मा के विवाह मे दे दिया | यह केवल परमजीत के परिवार की कहानी है, ऐसा नही है बल्कि वर्तमान युग के हर परिवार की कहानी रही है | हाँ, जिसका प्रतिनिधित्व परमजीत का परिवार करता है | इहेज ने प्रतिष्ठा का रुप धारण कर लियाहै | जो अनेक विकृतियों की दात्री है दहेजप्रथा ने विवाह जैसे पवित्र संस्कार को भी विकृत एवं घृनित बना दिया है | दहेजप्रथा समाज कि विकृती को दर्शाती है | दहेज प्रथाने स्त्री संबधी अनेक समस्यावों को जन्म दिया है | पारिवारिक विघटन, अकेलापन, अजनबीपन कुंठा, निराशा, आत्महत्या, हत्या, नारीशोषण, स्त्री-पुरुष असमानता का भाव, अनमेल विवाह, बालविवाह, परित्याग, घटस्फोट, आदि समस्याए भी दहेजप्रथा की ही देन है | दहेज-प्रथा मानव को असंवेदनशील और समाज को खोकला बना रही है |

वह एक घृणित एवं विकृत बिमारी बन गई है | दहेज प्रथा के कारण ही असमानता का भाव पणप रहा है | दहेज प्रथा ने बाप को संसार का सबसे निरीह पाणी माना जाता है | दहेज प्रथा ने लडकी के पविार को लाचार, बेवस बना दिया है | दहेज प्रथा नें मनुष्य के कर्म को बौना और भौतिक सुख साधनों को उँचा बना दिया हैं | समाज को हिन्दी कथा - साहितय में अभिव्यक्त किया है |

संदर्भ सूची :

1) यत्र तत्र सर्वत्र, इन्दोर में शादियाँ देखकर,शरद जोशी पृ. 66
2) यत्र तंत्र सर्वत्र, मामला सास-बहु का,शरद जोशी, पृ 333
3) यंत्र तंत्र सर्वत्र इन्दोर में शादियां देखकर, शरद जोशी पृ.67
4) वही पृ. 67
5) यंत्रतंत्र सर्वत्र मामला1 - सास - बहु का, शरद जोशी पृ. 330-331
6) नारी एक विवेचन धर्मपाल - पृ 155
7) पीली आँधी - प्रथाखेतान पृ-162
8) बेहार ममता कालिया पृ. 141

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded
ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded